CODE-KVS(DR)/2025/KS

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, DELHI REGION

MARKING SCHEME

PRE BOARD 1 EXAMINATION (2025-26)

CLASS – XII **SUB- HINDI**
(CORE) (302)

M.M. – 80 **TIME – 3 HRS**

<u>सामान्य निर्देश:-</u>

* अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।

* वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।

* वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।

* यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ।

* मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड - क (अपठित बोध) (18)

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न
(10)

(क) ii मिट्टी और धरती)
1

(ख) iv बाल मनोविज्ञान की समझ होती है ।
1

(ग) iii केवल कथन (I), (II) और (III) सही हैं।

(घ) समाज की संस्कृति एवं जीवन की गुणवत्ता।
1

(ङ) शिक्षक वह आधार है, जिससे मानव पीढ़ी - दर - पीढ़ी हर प्रकार से सहायता पाता है तथा ज्ञान अर्जित कर काम करता है ।
2

(च) शिक्षक युवा मन को तैयार करते हैं, मार्गदर्शन करते हैं कि वे सफल हों और विकास का केंद्र बनें ।
2

(छ) मिट्टी में सही अनुपात में तत्त्व उपलब्ध होते हैं और जो पौधे उसमें उग रहे हैं, मिट्टी उन्हें| पोषक तत्त्व उपलब्ध कराती है, शिक्षक अपने अंदर परंपराओं को संजोते हैं । शिक्षक विद्यार्थियों के आवेग को समेटते हैं और जो नौजवान विद्यार्थी शैतान होते हैं, उन्हें रास्ते पर लाते हैं ।
2

2. अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(08)

(क) (ii) क्योंकि धरती का पूर्ण निर्माण होने में अभी समय है
1

(ख) (iii) पूर्णता की खोज में निरंतर काम करते रहना ही जीवन का सार है
1

(ग) (ii) सृजनकर्ता की गति ही संसार की गति है
1

(घ) कवि अधूरे सृजन से निराश न होने की बात कह कर यह संकेत देना चाहते हैं कि है मानव! तू निराश मत हो, क्या पता इस निराशा में ही तुझे आशा की कोई किरण मिलजाए। 1

(ङ:) कवि के अनुसार, प्रलय से कलाकार को इसलिए निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि निराश होने पर कलाकार अपनी रचना को पूर्ण नहीं कर सकता कलाकार को अपनी रचना को पूर्ण करने के लिए प्रतिपल कष्टों से जूझने के लिए तैयार रहना चाहिए। प्राणों में तभी जीवन का संचार होगा, जब कलाकार बिना रुके अपने सृजन में निरंतर लगा रहेगा, क्योंकि गति का नाम ही अमर जीवन है।
2

(च) प्रस्तुत पंक्ति से अभिप्राय है कि स्वर्ग की नींव का पता अभी नहीं चल सकता है, क्योंकि धारा अभी अपूर्ण है। अतः सृष्टि का सृजन भी अपूर्ण है। अतः है थके हुए कलाकार! तुम्हें प्रतिपल सजग रहकर धरती को स्वर्ग में बदलने के लिए चलते रहना चाहिए तभी धरती पर स्वर्ग की नींव का पता चल सकता है।
2

खंड – ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न) (22)

दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख: - 6

आरंभ -- 01 अंक

विषयवस्तु -- 03 अंक

प्रस्तुति -- 01 अंक भाषा -- 01 अंक

4. किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर: ---
(08)

(i) टेलीविजन खबरों में जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है जिसे एंकर द्वारा पढ़ा जाता है। इसी को एंकर विजुअल कहा जाता है।

(Ii) इसमें आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो, जो समाचारवाचक आसानी से पढ़ सके। इसमें सामासिक और तत्सम शब्दों की बहुलता न हो। जहां तक हो सके, इसमें संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग से बचना चाहिए।

(Iii) संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को अखबार की आवाज़ माना जाता है । संपादकीय के ज़रिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं ।संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जात। संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उन के सहयोगियों पर होता है ।

(Iv) फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है ।

(v) संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है ।मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं ।एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली अपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है।

5. किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 80 शब्दों में उत्तर: --- (8)

(i) जहाँ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है वहीं नाटक लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक - दूसरे से जोड़ता है। क्योंकि दृश्य का स्मृतियों से गहरा संबंध होता है इसलिए नाटक एवं फ़िल्म को लोग देर तक याद रखते हैं । यही कारण है कि गोदान, देवदास, उसने कहा था, सद्गति आदि के नाट्य रूपांतरण कई बार हुए हैं और कई तरह से हुए हैं । 4

(ii) रेडियो नाटक में संवाद की विशेषताएँ - रेडियो नाटक में पात्रों संबधी तमाम जानकारी हमें संवादों के माध्यम से ही मिलती हैं। उनके नाम, आपसी संबंध, चारित्रिक विशेषताएँ, ये सभी हमें संवादों द्वारा उजागर करना होता है । भाषा पर भी विशेष ध्यान रखना होगा । वो पढ़ा - लिखा है कि अनपढ़, शहर का है कि गाँव का, क्या वो किसी विशेष प्रांत का है, उसकी उम्र क्या है, वो क्या रोज़गार - धंधा करता है । इस तरह की तमाम जानकारियाँ उस चरित्र की भाषा को निर्धारित करेंगी । फिर पात्रों का आपसी संबंध भी संवाद की बनावट पर असर डालता है। रेडियो क्योंकि मूलतः संवाद प्रधान माध्यम है, इसलिए यहाँ इसका खास ध्यान रखना होता है। 4

(iii) इंटरनेट पर समाचार पत्रों का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर हम किसी भी रूप में समाचारों, लेखों, चर्चा परिचर्चा के साथ वाद -विवादों, फीचर लेखन आदि का कार्य कर सकते हैं। इसे ही इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं। इसी पत्रकारिता को वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है। 4

खंड - ग (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न) अंक (40)

उत्तर 6. काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उत्तर: (05)

(क) (iv) खेत 1

(ख) iv - (3), II - (1), III- (2) 1

(ग) ii कवि कर्म के चरण 1

(घ) iv कथन तथा कारण, दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है । 1

(ङ) i यह चिरकाल तक आनंद देता है 1

उत्तर 7. किन्हीं दो प्रश्नों के 60 शब्दों में उत्तर:
(06)

(i) कविता में कवि एक ओर जग - जीवन का भार लिए घूमने की बात करता है इसका आशय मनुष्य की सामजिकता से है| मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे सांसारिक दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है जैसे कवि कर रहे हैं। जीवन में दुख - सुख दोनों ही आते हैं ।मनुष्य को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह इस जीवन से अलग नहीं हो सकता । दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ का आशयअन्य लोगों द्वारा की गए आलोचना से है| कवि इसे हृदयहीन और स्वार्थी मानते हैं| वह अपनी मस्ती में रहते हैं और जहाँ तक हो सके प्रेम बाँटने की कोशिश करते हैं । 3

(ii) सबसे तेज बौछारें तथा भादों के जाने के बाद सवेरा हुआ जो अत्यंत लालिमा और सुंदरता से परिपूर्ण था । वह सवेरा खरगोश की आँखों के समान लाल रंग का था । वातावरण स्वच्छ व धुला हुआ दिखाई देता है । धूप चमकीली होने लगी और फूलों पर तितलियाँ मंडराने लगीं । जब बच्चे के रंग - बिरंगे पतं आकाश में उड़ाने लगे तो चारों ओर सीटियों और किलकारियों की आवाज़ गूंज उठी तथा तितलियों ने मधुर गुंजार शुरू कर दिया । 3

(Iii) कवि कहता है कि फूल एक निश्चित समय पर खिलते हैं उनका जीवन भी निश्चित होता है,| परंतु कविता के खिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता है । उसकी जीवन अवधि असीमित है । यह कभी नहीं मुरझाती । उनकी कविताओं की महक सदैव फैलती रहती है । 3

उत्तर 8 . किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर:
(4)

(i) "हम समर्थ शक्तिमान ' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की

मानसिकता का पता चलता है । मीडिया कर्मी या मीडिया - संचालक अपने प्रचार - प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं । चैनल के मुनाफ़े के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है । 2

(Ii) कवि कहता है कि जिस प्रकार ज्यादा काली सिल अर्थात् पत्थर पर थोड़ा - सा केसर डाल देने से वह धुल जाती है। अर्थात् उसका कालापन खत्म हो जाता है, ठीक उसी प्रकार काली सिल को किरण रूपी केसर धो देता है अर्थात् सूर्योदय होते ही हर वस्तु चमकने लगती है । 2

(iii) हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमालय पर्वत गए थे ।उन्हें आने में देर हो रही थी। लक्ष्मण मूर्छा के बाद पूरा माहौल शोकग्रस्त हो गया था । समस्त भालू - वानर सेन| राम को देख अत्यंत दुखी थे। जैसे ही हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर शोक सभा में पहुंचे, तो वे पूरा का पूरा पर्वत ही अपने हाथ पर उठा लाए थे । हनुमान को देख राम तथा समस्त जन थोड़े खुश हुए तथा शीघ्र ही वैद्य जी ने लक्ष्मण को संजीवनी बूटी पिलाई तो लक्ष्मण उठ खड़े हुए। राम सहित पूरी वानर सेना खुश हो गई । इस प्रकार शोक - ग्रस्त माहौल में हनुमान| के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव कहा गया है । 2

उत्तर: 9. गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर: -
(05)

(i) (घ) व्यवसाय का चयन 1

(ii) (क) स्वाधीनता के साथ जीना 1

(iii) (ग) अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता 1

(iv) (क) इन अधिकारों को के बाद भी दासता की प्रक्रिया बनी रहती है 1

(v) (ख) जातिगत भेदभाव को बढ़ावा देने वाले 1

उत्तर 10. किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर:
(06)

(i) जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं- • जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ - साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है । सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है । जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है । इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है । यह जन्म पर आधारित होता है । भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है । 3

(ii) बाजार मैं एक जादू है। वह जादू व्यक्ति के मन मस्तिष्क पर इस प्रकार प्रभाव डालता है जिस प्रकार चुंबक का जादू लोहे पर चलता है। जब व्यक्ति की जेब भरी होती है और मन खाली होता है, तो जादू का असर खूब चलता है। जेब खाली और मन भरा नहीं होने पर भी उसका जादू चल जाता है। इस इस प्रभाव से बचने के लिए हमें बाजार में तब जाना चाहिए जब हमारा मन खाली न हो। जिस प्रकार जैसे गर्मी में पानी पीकर बाहर जाएं तो , उसे लू लगने की संभावना कम रहती है उसी प्रकार यदि हमारा मन लक्ष्य से भरा हो तो हम बाजार से अपना सुख ढूंढ़ ही लेंगे और बाजार हमको तंग नहीं कर पाएगा। 3

(Iii) महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी । यह आवाज बूढ़े- बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के| आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी । उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में बिजली दौड़ जाती थी । ठीक है कि ढोलक की आवाज में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे । ये इस प्रकार ढोलक की आवाज गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी ।

उत्तर 11. किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर: (04)

(I) जीजी के अनुसार, मनुष्य के पास जो चीज़ न हो और वह उसका त्याग करके किसी और को देता है, तो उसका बहुत अच्छा फल मिलता है इंदर सेना ऐसे समय में पानी की माँग करती थी, जब लोगों के पास स्वयं पानी नहीं हुआ करता था । लोग अपने घरों से निकाल - निकालकर पानी देते थे ।लेखक को पानी की यह बर्बादी पसंद नहीं थी । जीजी का कहना था कि पहले तुम स्वयं त्याग करो, तब विधाता तुम्हें चौगुन आठ गुणा करके देगा। 2

(ii) भक्तिन के आ जाने के बाद महादेवी को देहात की संस्कृति, खान - पान, रहन - सहन, वेश-भूषा आदि का ज्ञान हो गया क्योंकि भक्तिन के अंदर दूसरों को बदल देने के गुण भरपूर मात्रा में विद्यमान थे । वह गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, मकई की लपसी, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे - हरे दाने की खिचड़ी, बाजरे के तिल वाले ठंढे| पुए आदि बनाती । महादेवी वर्मा बार - बार प्रयास करके भी उसके स्वभाव को परिवर्तित नहीं| कर पायीं और धीरे - धीरे उनका स्वाद बदल गया । इसलिए भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई । 2

(Iii) अवधूत ' वह है जो सांसारिक मोह माया से ऊपर होता है । वह संन्यासी होता है । लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है क्योंकि वह कठिन परिस्थितियों में भी फलता - फूलता| रहता है । भयंकर गर्मी, लू, उमस आदि में भी शिरीष का पेड़ फलों से लदा हुआ मिलता है। अतः एक अवधूत की तरह शिरीष फूल भी बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता। 2

उत्तर 12. किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर: (10)

(i) यशोधर बाबू के माता पिता का देहांत बचपन में ही हो गया था, इसलिए वह बचपन से ही ज़िम्मेदारियों के बोझ तले दबे थे । वह बचपन में अपनी उम्र के बच्चों के साथ नहीं बल्कि बड़े बुजुर्गों के साथ रहते हुए पले बढ़े। अत: वह उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे । यशोधर बाबू अपने आदर्श किशन दा से अधिक प्रभावित है और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध है ।जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित है । वह बेटी के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती है ।वह अपने बेटों के जीवन में कोई ताँक - झाँक नहीं करती । यशोधर बाबू की पत्नी आज की आधुनिकता के हिसाब से रहती है और समय में परिवर्तन होता देख ख़ुद में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करती है परंतु यशोधर बाबू पुराने रीति रिवाज़ों में बंधकर रहते हैं । 5

(li) "जूझ" कहानी के लेखक का जीवन संघर्ष सभी के लिए एक आदर्श प्रेरणास्रोत कहा जा सकता है, क्योंकि वह जटिल परिस्थितियों में भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए कठिन प्रयास करता है। वह खेती का काम करने के साथ-साथ पढ़ाई करता है। उसके जीवन में आर्थिक समस्या है। उसके सहपाठी उसके पहनावे को देखकर मजाक उड़ाते हैं। इन सब बाधाओं को वह अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के दम पर पर कर लेता है। कविता लिखने का शौक अंततः उसके लिए बहुत बड़ा लक्ष्य बन जाता है, जिसे वह सफलतापूर्वक हासिल करता है। वस्तुतः कहानी के लेखन लेखक में समस्याओं से जूझने की प्रवृत्ति है। इसी जूझने की प्रवृत्ति के कारण वह अपने जीवन लक्ष्य को एक के बाद एक प्राप्त करता जाता है। वह अपने आलसी एवं गैर जिम्मेदार पिता को भी संतुष्ट रखते हुए अपनी आगे की पढ़ाई करता है। विपरीत परिस्थितियों से जूझने की क्षमता के अतिरिक्त कहानी के लेखक में कठिन परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प संबंधी चारित्रिक विशेषताएं भी मौजूद है। वह अपनी धुन में रमने की प्रवृत्ति यानी लगनशीलता के कारण ही उच्च स्तर का कवि बन सका। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जूझ कहानी के लेखक का जीवन संघर्ष हमारे लिए अत्यधिक प्रेरणादायक है। 5

(iii) सिंधु घाटी सभ्यता की खोज के शुरू में यह समझा जाता था कि इस घाटी के लोग अन्न नहीं उगते थे। नई खोजों के साथ यह स्पष्ट हो गया कि यहां उन्नत खेती होती थी। अनाज आदि की ज़रूरतें वे लोग आयात करके पूरा कर लेते थे। खेतीहर और पशुपालक सभ्यता को कुछ विद्वानों द्वारा मना भी गया है। लोहा न होने के कारण पत्थर और तांबे के औजार ही खेती के प्रयोग में लाए जाते थे। इतिहासकार इरफान हबीब का मानना है कि यहां के लोग रबी की फसल भी उगाते थे। गेहूं कपास, चने और सरसों के प्रमाण खुदाई के दौरान मिले हैं। यहां ज्वार बाजरा, रागी की उपज के साथ-साथ खजूर, अंगूर और खरबूजे भी उगाए जाते थे और बेर की झाड़ियां के चिन्ह भी पाए गए हैं। यहां कपास की भी खेती होती थी। इन्हीं सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम इस बात से सहमत है कि सिंधु सभ्यता में खेती का उन्नत रूप देखने को मिलता है। 5